

डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 14, जोशुआ 9

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र संख्या 14, जोशुआ 9, गिबोनाइट संधि है।

ठीक है, इस खंड में, हम यहोशू अध्याय 9 को देखेंगे और इस तत्काल अध्याय को कुछ ऐसा कहा जाएगा कि मैं कह सकता हूँ कि इसे गिबोनाइट संधि कहा जा सकता है, वह संधि जो इस्राएलियों ने गिबोनियों के साथ की थी।

लेकिन यह तीन अध्यायों के एक खंड की शुरुआत है जो एक तरह से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह पुस्तक की गतिविधियों के क्षितिज का विस्तार करता है। लड़ाइयों का पहला सेट भौगोलिक दृष्टि से बहुत निकटता से जुड़ा हुआ है, जेरिको और ऐ, अध्याय 6 से 8, अध्याय 9 से 11।

इनमें से प्रत्येक अध्याय में, हमारे पास इज़राइल के खिलाफ आने वाले राजाओं के गठबंधन हैं। अध्याय 9, श्लोक 1 और 2 में हम इसे देखते हैं। अध्याय 10, दक्षिण के पाँच राजाओं का एक गठबंधन है जो इस्राएल के विरुद्ध है।

अध्याय 11, कई उत्तरी राजाओं का गठबंधन है। तो इन तीन अध्यायों में एकीकृत सूत्र यह है कि दुश्मन राजाओं के ये गठबंधन इज़राइल के खिलाफ आ रहे हैं और उन्हें उससे और फिर लड़ाइयों से निपटना होगा। ये लड़ाइयाँ अधिक फार्मूलाबद्ध हो जाती हैं और अधिक प्रकार से सारांशित तरीके से निपटाई जाती हैं, विशेषकर अध्याय 10 के अंत में और अध्याय 11 में।

हमारे पास वे विवरण नहीं हैं जो हम जेरिको में या निश्चित रूप से ऐ में देखते हैं। लेकिन फिर भी, आइए यहां अध्याय 9 के अंश को देखें। हमने अपनी चर्चाओं के पहले भाग में पहले ही उल्लेख किया है कि इज़राइल की प्रतिष्ठा इससे पहले थी। राहाब ने अध्याय 2 में उल्लेख किया है कि हमने सुना है कि तुम्हारे परमेश्वर ने मिस्रियों और सिनाई और ओग के साथ क्या किया है।

अध्याय 5, श्लोक 1 में, हमने देखा कि वहाँ के राजाओं के गठबंधन ने सुना था कि भगवान ने क्या किया था और वे बहुत डर गए थे। तो उन पहले दो मामलों में, हम कनानियों को इस्राएलियों से डरते हुए देखते हैं। यहाँ अब, एक बदलाव है।

अध्याय 9, श्लोक 1 में, यह कहा गया है कि जैसे ही सभी राजा जो जॉर्डन के पार पहाड़ी देश में तट के किनारे निचले देश में थे, लेबनान की ओर महान समुद्र, वगैरह, श्लोक 2 में, जैसे ही उन्होंने सुना यह, वे यहोशू और इस्राएल से लड़ने के लिए एक साथ इकट्ठे हुए। तो अब बदलाव है। जबकि पहले जब कनानियों ने इस्राएल के परमेश्वर और परमेश्वर द्वारा दी गई विजयों के बारे में सुना, तो वे डर गए, यहाँ वे नहीं हैं।

वे इजराइल के खिलाफ एक आक्रामक हमला शुरू करते हैं। और मुझे लगता है कि इसका कारण यह है कि अब इजराइल ने भेद्यता दिखाई है। वे लड़ाई हार गये हैं।

वे ऐ तक पहुँच गये थे और हार गये थे। तो शायद इससे इन राजाओं को कुछ अतिरिक्त साहस मिला। इसलिये, वे इस्राएलियों से लड़ने आये।

राजा की सुनवाई का यह रूप अध्याय 2, श्लोक 9 से 11, अध्याय 5, श्लोक 1, अध्याय 9, श्लोक 1, अध्याय 9, श्लोक 3 में भी पाया जाता है। जब गिबोन के निवासियों ने सुना, और फिर उन्होंने कुछ अलग किया, तो उन्होंने अलग तरीके से प्रतिक्रिया दी। लेकिन अध्याय 10, श्लोक 1 में ध्यान दें, यह वही बात कहता है।

जैसे ही यरूशलेम के राजा अडोनाई ज़ेडेक ने सुना कि यहोशू ने ऐ पर कब्ज़ा कर लिया है, तब उसने इस्राएलियों के विरुद्ध एक गठबंधन का नेतृत्व किया। और फिर अध्याय 11, पद 1, जब हासोर के राजा याबीन ने यह सुना, तो उसने एक दल भेजा और इकट्ठा किया। इसलिए इजराइल की प्रतिष्ठा ज्ञात होने का विचार वह है जो हम हर जगह देखते हैं।

यह एक धागा है, पूरी किताब में चलने वाला धागा है। तो अब आइए देखें, देखें कि गिबोनियों ने जो कुछ सुना उसके प्रत्युत्तर में वे वास्तव में क्या करते हैं। और यह उससे भिन्न है जो अन्य राजाओं ने अध्याय 9, श्लोक 1 और 2 में किया है, और जो वे करते हैं, बाद के राजा अध्याय 10 और 11 में करते हैं।

क्योंकि श्लोक 2 और, श्लोक 3 और 4 हमें एक तरह से मंच प्रदान करते हैं। जब गिबोन के निवासियों ने सुना कि यहोशू ने यरीहो और ऐ से क्या किया है, तब उन्होंने चतुराई से काम लिया। और उन्होंने जाकर भोजन तैयार किया, और अपने गदहों के लिये घिसे-पिटे बोरे और घिसी-पिटी और फटी हुई मशकें ले लीं, और ऐसा ही होता रहा।

और इसके पीछे जो है वह यह है कि किसी तरह उन्हें इजराइली अभ्यास या इजराइली का कुछ ज्ञान था, जो भगवान ने इजराइल को बताया था। क्योंकि इसकी पृष्ठभूमि पेंटाटेच के दो अंशों में है। एक निर्गमन 34, श्लोक 11 और 18 में है, जिसे हम नहीं देखेंगे।

लेकिन दूसरा व्यवस्थाविवरण 20 में है, विशेष रूप से श्लोक 15 से 18 तक। इसलिए, मैं हमें उस ओर ले जाऊंगा। हमने इस परिच्छेद को पहले एक या दो बार अन्य संदर्भों में देखा है, लेकिन हम खुद को इसकी याद दिलाएंगे।

व्यवस्थाविवरण 20 में, कनान में उन्हें क्या करना है इसके लिए परमेश्वर के निर्देशों के मध्य में। इसलिए, श्लोक 10 को देखें, उदाहरण के लिए, जब आप किसी शहर से लड़ने के लिए उसके करीब आते हैं, तो शांति की शर्तें पेश करें। यदि वे सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं, तो सब कुछ अच्छा है।

परन्तु यदि नहीं, तो तुम्हें उनके विरुद्ध युद्ध करना होगा, तलवार से हमला करना होगा, इत्यादि। परन्तु फिर पद 16 में यह भी कहा गया है, कि इन लोगों के नगरों में तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे निज

भाग करके देता है। दूसरे शब्दों में, कनान के शहरों में, आप सांस लेने वाली किसी भी चीज़ को जीवित नहीं बचाएंगे।

परन्तु तू उनको हितियों, एमोरीयों, इत्यादि को सत्यानाश करने के लिये अर्पण कर देना, ऐसा न हो कि वे तुम्हें अपने घृणित कामों के अनुसार चलना न सिखाएं। तो, मुद्दा यह है कि कनान के भीतर के शहरों को ही इस्राएलियों द्वारा विनाश के लिए समर्पित किया जाना है। इसलिए किसी तरह गिबोनियों को इस प्रावधान के बारे में पता है।

हम नहीं जानते कैसे. लेकिन इसलिए, इज़राइल के प्रति उनका दृष्टिकोण एक अलग दृष्टिकोण से है। वे अपने अस्तित्व में रुचि रखते हैं।

शायद उन्हें यकीन नहीं है कि वे इसराइल को हरा सकते हैं या नहीं। इससे यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। अध्याय 9, श्लोक 3 में, जब उन्होंने सुना कि परमेश्वर ने क्या किया है, यहोशू ने ऐ में जेरिको के साथ क्या किया है, कनानियों की बड़ी पराजय हुई है, तो उन्होंने सोचा, ठीक है, हमें एक अलग तरीके से प्रयास करने की आवश्यकता है।

इसलिए, वे सजते-संवरते हैं और भोजन वगैरह लाते हैं जिससे ऐसा लगता है जैसे वे यहां आ गए हैं जहां यहोशू गिलगाल के शिविर में है, पद 6। मेरा मतलब है, गिलगाल के बारे में बस एक कोष्ठक शब्द। पहला स्थान जहाँ आपने गिलगाल का सामना किया है वह जॉर्डन नदी के ठीक पार है, जेरिको से बहुत दूर नहीं है, जहाँ उन्होंने खतना किया था, और गिलगाल शब्द गलाल शब्द से संबंधित है, लुढ़कने के लिए, और मिस्र की बदनामी दूर हो गई है। यह एक महत्वपूर्ण स्थल है, लेकिन पुराने नियम में एक से अधिक गिलगाल हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह जॉर्डन नदी के नीचे नहीं बल्कि मध्य पहाड़ी क्षेत्र में है। यह संभवतः वही स्थान है जहाँ से सैमुअल 1 सैमुअल 7 में जाता है, और वहाँ एक या दो अन्य गिलगाल भी हो सकते हैं। इस बारे में विद्वानों में थोड़ा मतभेद है, लेकिन केवल एक ही नहीं, कम से कम दो हैं।

यह वही है जो मध्य पहाड़ी देश में है, और पद 6 में वे जो कहते हैं वह कहता है, हम दूर देश से आए हैं, इसलिये अब हमारे साथ वाचा बान्धो। मुद्दा यह है कि हम ऐसी जगह से आए हैं जहां प्रतिबंध नहीं है। हम ठीक हैं।

हम उसका हिस्सा नहीं हैं जिसे आपको नष्ट करना चाहिए। अब, उनके श्रेय के लिए, इस्राएलियों ने पद 7 में कहा, हो सकता है कि आप हमारे बीच में रहें। हम तुम्हारे साथ कैसे वाचा बाँध सकते हैं? और उन्होंने कहा, नहीं, हम तो तेरे दास हैं, और फिर उन्होंने अपना सब भोजन उनको दिखाया।

इसे देखो, श्लोक 12। यहाँ हमारी रोट्टी है। जब हमने इसे अपने घरों से लिया तब भी यह गर्म था।

अब यह पुराना और टेढ़ा-मेढ़ा हो गया है, और शराब के डिब्बे नये थे, लेकिन अब वे पुराने हो गये हैं, इत्यादि। तो, यह गिबोनियों की ओर से इस्राएलियों के साथ मिलने के लिए एक अलग तरीका

आज़माने का एक बहुत ही चालाक और बहुत ही चतुर धोखा है, और इस्राएली इसके लिए गिर गए। पद 14 कहता है कि पुरुषों ने कुछ प्रावधान ले लिए, इसलिए वे एक साथ संगति कर रहे हैं।

वे यह अनुबंध करने जा रहे हैं। वे एक साथ रोटी तोड़ने जा रहे हैं, लेकिन यहां घातक दोष श्लोक 14 के अंत में है, क्योंकि यह कहता है, उन्होंने प्रभु से सलाह नहीं मांगी। तो, यह एक समस्या है, और इस वजह से भगवान अपने लोगों से नाराज हैं, लेकिन हम यहोशू और बड़ों को धोखा देने के लिए दोषी नहीं ठहरा सकते।

यदि धोखा देने वाला पर्याप्त चतुर और बुद्धिमान होता, तो इसने उन्हें मूर्ख बना दिया होता। हालाँकि, हम उन्हें जिस चीज़ के लिए दोषी ठहरा सकते हैं, वह यहाँ भगवान का मार्गदर्शन नहीं माँगना है, और भगवान ने निस्संदेह कहा होगा, नहीं, ये स्थानीय लोग हैं, और आपको उन्हें भी नष्ट करने की आवश्यकता है। तो यहीं गलती है।

यह जोशुआ की किताब में उन कुछ स्थानों में से एक है जहां जोशुआ, सबसे पहले, इस बिंदु पर जोशुआ भी प्रकट नहीं होता है। इसमें कहा गया है, उन्होंने सलाह नहीं मांगी, इसलिए यहोशू यहां अपने उचित नेतृत्व कार्य का प्रयोग नहीं कर रहा है। यह उन स्थानों में से एक है जहां वह नहीं करता है, वह अपने नेतृत्व में विफल होता दिख रहा है, और इसलिए इस अनुबंध को बनाने के समझौते के परिणामस्वरूप, गिबोनियों के साथ यह समझौता, यहोशू पद 15, ने उनके साथ शांति बनाई, बनाया उनके साथ एक वाचा बाँधी कि उन्हें जीवित रहने दो।

मण्डली के अगुवों ने उन से शपथ खाई। तो यह एक बड़ी समस्या है, लेकिन एक अनुबंध, एक शपथ लेने का विचार, न केवल बाइबल में, बल्कि प्राचीन निकट पूर्वी संदर्भ में भी बहुत मौलिक है। यह कुछ ऐसा है, एक गंभीर चीज़ जिसे आप बनाते हैं, जिसके साथ एक समझौता करते हैं, और यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हल्के से तोड़ा गया है।

इसलिए, जब उन्होंने उनके साथ अनुबंध करने के तीन दिन बाद पद 16 की खोज की, तो उन्हें पता चला कि वे उनके पड़ोसी थे और वे उनके बीच रहते थे। तो वहाँ, पद 18 को छोड़कर, परन्तु इस्राएल के लोगों ने उन पर आक्रमण नहीं किया क्योंकि उनके नेताओं ने यहोवा की शपथ खाई थी। अध्याय का शेष भाग उसके परिणाम को दर्शाता है और दिखाता है कि कैसे यहोशू ने गिबोनियों को बुलाया और कहा, तुम लोगों ने ऐसा क्यों किया है? तुमने हमें धोखा क्यों दिया? श्लोक 22, और इसलिए, इस कारण से, आप शापित हैं।

हम तुम्हें मार नहीं डालेंगे, लेकिन तुम हमारे नौकर, लकड़ी काटने वाले, पानी भरने वाले बनोगे। पद 23, और गिबोनवासी कहते हैं, ठीक है, ठीक है। हमें ऐसा करने में खुशी होगी।

वे कम से कम बच गए हैं। इसलिए, आयत 27 में, यहोशू ने उस दिन उन्हें लकड़ी काटने वाले, सभा में पानी भरने वाले और यहोवा की वेदी बनाने वाले बनाए, जो आज तक बने हुए हैं। इसलिए जब भी किताब लिखी गई, वह कुछ शताब्दियों तक नहीं तो कम से कम दशकों तक चली।

तो, गिबोनीट कनानियों का एक और समूह था जो बच गया। मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि कनानियों के तीन समूह हैं जो जोशुआ की किताब में बचे हैं। वे उन्हें पूरी तरह से नष्ट करने के आदेश से बच गये।

एक अपने विश्वास के आधार पर राहब है। दूसरा है गिबोनियों को उनके धोखे के आधार पर एक अलग दृष्टिकोण से, लेकिन उन्हें बख्श दिया गया। तीसरे वे सभी लोग हैं जिन्हें कोई भी जनजाति अपने क्षेत्र से बाहर निकालने में सक्षम नहीं थी जिसके बारे में हम बाद के अध्यायों में पढ़ेंगे।

राहब की कहानी एक सुखद अंत वाली महान कहानी है। वह यीशु की पंक्ति का हिस्सा है। वह नए नियम में आस्था के हॉल का हिस्सा है।

गिबोनियों की कहानी का भी सुखद अंत है। ऐसा लगभग एक हजार साल बाद होता है। हमने इसके बारे में नहेमायाह की पुस्तक में पढ़ा।

इसलिए, यदि आप नहेमायाह अध्याय 3 खोलते हैं, तो हम वहां उल्लिखित गिबोनियों को देखेंगे। नहेमायाह अध्याय 3, अब यहाँ सन्दर्भ यह है कि यह लगभग एक हजार वर्ष बाद की बात है। यह यरूशलेम से बेबीलोन में निर्वासन के बाद की बात है।

और फिर वे वापस आ गए हैं। नहेमायाह फारस के हाकिम, फारस के राजा से यह आज्ञा ले कर लौटा है, कि वह यरूशलेम के चारों ओर यहूदिया के क्षेत्र का हाकिम होगा। वह एक राजनीतिक और प्रशासनिक नेता के साथ-साथ एक आध्यात्मिक नेता भी हैं।

और जिन चीज़ों में नहेमायाह उनकी मदद करता है उनमें से एक है यरूशलेम शहर की दीवारों का पुनर्निर्माण करना। और आपको याद होगा कि हर कोई इसमें योगदान देता है और अपना काम करता है। और अध्याय 3 वह अध्याय है जो उन सभी लोगों की जानकारी देता है जो उस परियोजना में शामिल थे और जिन्होंने जहां वे रहते थे वहां से अपना हिस्सा निभाया।

और इसलिए, हम 21वीं सदी के लोगों के लिए यह एक प्रकार का लगभग अर्थहीन अध्याय है। हम लोगों, नामों वगैरह को नहीं जानते। यह बस इतनी लंबी सूची है।

यह मुझे अमेरिका के एक छोटे शहर के टाउन स्क्वायर के स्मारकों की याद दिलाता है जहां प्रथम विश्व युद्ध के दिग्गजों या द्वितीय विश्व युद्ध के दिग्गजों की सूची है। लेकिन यह महत्वपूर्ण है क्योंकि लोग, वंशज और अन्य लोग नामों का सम्मान कर सकते हैं और जान सकते हैं कि ये वहां थे। इन्होंने अपना काम किया।

यहाँ भी वही बात है। व्यक्तियों की सूची के नाम यहां नहेमायाह अध्याय 3 की पुस्तक में संरक्षित हैं। और उस पूरी सूची के बीच में, श्लोक 7 को देखें। इन पिछले लोगों के आगे गिबोनीट मेलतियाह और मेरोनोथाइट जादोन, के लोगों ने मरम्मत की। गिबोन और मिज़पा, प्रांत के गवर्नर की सीट, आदि। इसलिए, हम यहां केवल एक तथ्य के रूप में देखते हैं, इसमें कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन वास्तव में, उन सभी यहूदियों की सूची में जो दीवारों का पुनर्निर्माण कर रहे हैं, परमेश्वर के सभी लोग जो यह कर रहे हैं, हमारे पास गिबोनवासी हैं।

वे बच गए हैं। वे अब लकड़हारे और पानी खींचने वाले नहीं हैं। वे इज़राइल के जीवन में पूर्ण भागीदार हैं।

तो, किसी समय, वे इज़राइल के जीवन में आत्मसात हो गए थे। और मैं कहूंगा कि इसने इज़राइल के ईश्वर को इस तरह गले लगा लिया कि वे अब एक हजार साल बाद जीवन में पूर्ण भागीदार हैं। इसलिये वे धोखे से इस्राएल के घराने में प्रविष्ट हो गये।

लेकिन अंत में उनकी कहानी का सुखद अंत हुआ। उसी पुस्तक के अध्याय 7 में एक और छोटे अंश, नहेमायाह अध्याय 7, का भी उल्लेख करना होगा, जो निर्वासन से वापस आए लोगों की एक सूची है। तो, ये वे लोग हैं जिन्हें ले जाया गया है, यरूशलेम से बेबीलोन में बंदी बना लिया गया है, वे वहां लगभग 70 साल, 50, 70 साल तक रहे थे, और अब वापस आ रहे हैं।

और फिर, इन सूचियों में, देखकर, आप जानते हैं, बस अमुक के पुत्रों की सूची बनाएं, उनके कितने वंशज वापस आए। और श्लोक को देखो, श्लोक 21 से शुरू करते हुए, अतेर के पुत्र, अर्थात् हिजकिय्याह, 98 जीवित बचे। पद 22, हशूम की सन्तान, 328।

तो फिर, एक हजार साल बाद, ऐसे गिबोनवासी थे जिन्हें यहूदियों के रूप में देखा गया था, उन्हें बेबीलोनियों ने बंदी बना लिया था, और उनमें से 95 अब निर्वासन के तहत लौट आए थे। तो, उस कहानी का एक सुखद अंत है, भले ही गिबोनियों ने छल से इज़राइल के साथ संबंध बनाए। ईश्वर अंततः दयालु थे और वे भी विदेशी थे जो अपनी भूमिका निभाते हुए इज़राइल का हिस्सा बन गए।

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र संख्या 14, जोशुआ 9, गिबोनाइट संधि है। ♪♪♪